# राजनीतिक विकास

बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में विकसित व्यवहारवादी क्रन्ति ने राजनीति के अध्ययन में आमूलचुल परिवर्तन ला दिया। इसी क्रम में व्यवस्था विश्लेषण उपागम् के विकास से द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद नवोदित देशों की राजनीतिक व्यवस्था में आये परिवर्तनों एवं उनकी क्षमताओं के आकलन के प्रति राजवैज्ञानिकों की रूचि बढ़ी। जिसमें राजनीतिक आधुनिकीकरण एवं राजनीतिक विकास की अवधारणाओं का उदय हुआ। इन देशों की राजनीतिक व्यवस्थाओं में परिपक्वता के आकलन के लिए राजनीतिक विकास की अवधारणा को आधार बनाया गया परन्तु इसका मानक तय करना अत्यंत जटिल हो गया। आमण्ड एवं पॉवेल, मैकेन्जी, वीनर एवं ऑसगुडफिल्ड तथा लुसियन पाई आदि इस अवधारणा के विवेचन में अग्रणी रहे तथा इसके विभिन्न अवयवों पर प्रकाश डालने में सफल रहे।

## परिभाषा एवं अर्थ

राजनीतिक विकास को किसी राजनीतिक व्यवस्था की समाज की समस्याओं की पहचान, उनका निवारण तथा लोकसहभागिता प्रशस्त करने की क्षमता के संदर्भ में देखा गया। दूसरे शब्दों में उन व्यवस्थाओं में लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया का आकलन मुख्य विन्दु बन गया। विभिन्न विद्वानों ने इसे भिन्न तरीकों से परिभाषित करने का प्रयास किया।

जे. एम. मैकेन्जी (J M Mackenzie) ने इसे ''समाज के उच्चस्तरीय अनुकूलन के प्रति अनुकूल होने की क्षमता'' के रूप में परिभाषित किया। वहीं आमण्ड एवं पॉवेल (Almond and Powell) ने कहा कि ''राजनीतिक विकास राजनीतिक संस्थाओं की अभिवृद्धि, विभिन्नीकरण, और विशेषीकरण तथा राजनीतिक संस्कृति का बढ़ा हुआ लौकिकीकरण (secularisation) है।'' इसकी सर्वमान्य परिभाषा लुसियन पाई (Lucian Pye) ने दिया, ''राजनीतिक विकास संस्कृति का विसरण और जीवन के पुराने प्रतिमानों को नई मांगों के अनुकुल बनाने, उनके साथ सामंजस्य स्थापित करने की प्रक्रिया है।''

अंत में हम कह सकते हैं कि राजनीतिक विकास एक प्रक्रिया है जो जनता की समानता और राजनीतिक व्यवस्था की कार्यक्षमता तथा उसकी उपव्यवस्थाओं की स्वायतता में वृक्रि होती है। सरल शब्दों में कहा जाय तो राजनीतिक विकास राजनीतिक व्यवस्था की वह क्षमता है जिसमें समाज की समस्याओं की पहचान, उनका निवारण तथा अधिकाधिक राजनीतिक सहभागिता को प्रशस्त करता हो तथा समाज में व्यवस्था कायम रखता हो।

## राजनीतिक विकास के प्रति विभिन्न दृष्टिकोण

इस विषय पर विद्वानों के विभिन दृष्टिकोण हैं। कुछ इसे एकमार्गी मानते हैं जिसके तहत सभी देश विकसित राष्ट्रों की तरह विकास की दिशा में अग्रसर हैं कुछ ने प्राप्त कर लिया और कुछ केवल अग्रसर है। वहुमार्गी मानने वाले मानते हैं कि प्रत्येक व्यवस्था अपने अनुकूल विकास का मार्ग तय करते है। सैमुअल हटिंगटन (Samuel Huntington) राजनीतिक व्यवस्थाओं की संस्थाओं एवं प्रक्रियाओ पर बल दिया और राजनीतिक विकास के तीन लक्षण बताए यथा – प्रशासन का युक्तिसंगत होना, राजनीतिक प्रकार्यों में विभिन्नीकरण तथा अधिकाधिक लोक सहभागिता। उसी प्रकार ऑरगेन्सकी (Organski) ने राजनीतिक विकास के अवयवों में राजनीतिक एकीकरण, औद्योगीकरण, लोक कल्याणकारी, तथा समृद्धि की अवस्था को रखा। कॉटास्की (Kautaskey) ने राजनीतिक विकास के पांच स्तर गिनाये जैसे – परम्परागत एवं कुलीनतांत्रिक, राष्ट्रीय बुद्धिजीवियों के प्रभुत्व की संक्रांति तथा प्रजातांत्रिक अवस्था।

## लुसियन पाई का विश्लेषण

परन्तु इन सभी भ्रामक विचारों का अंत करते हुए लुसियन पाई ने 1963 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'न्यू आस्पेक्ट्स ऑफ पॉलिटिकल डेवलपमेंट' (New Aspects of Political Development) में राजनीतिक विकास के दस अवयवों की चर्चा करते हुए उसके मुल लक्षणों का खण्डन किया है। पाई ने अपनी व्याख्या में निम्न स्पष्टीकरण दिया :–

**1. आर्थिक विकास** – नार्मन, बुकानन, कोलमैन आदि विद्वानो की मानयता है कि राजनीतिक विकास ही आर्थिक विकास का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। परन्तु पाई ने इसका खण्डन करते हुए कहा कि राजनीतिक विकास का सीधा संबंध आर्थिक विकास से नहीं है।

**2. औद्योगीकरण** – पाई इस मत का भी खण्डन करता है कि औद्योगिक विकास राजनीतिक जीवन को एक आयाम देता है। राजनीतिक विकास आर्थिक विकास या औद्योगिक विकास का पर्याय नहीं हो सकता कम आर्थिक विकास होते हुए भी राजनीतिक व्यवस्था लोकतांत्रिक रह सकती है।

**3. राजनीतिक आधुनिकीकरण** – पाई ने डेविड एप्टर के आधुनिकीकरण, जिसमें कहा गया कि विकासशील देश विकसित देशों के मानकों को अपनाते हैं, की अवधारणा को राजनीतिक विकास से अलग माना और कहा कि विकासशील देशों की अपनी विशिष्ट ऐतिहासिक परम्पराएं हैं जिनसे वे अलग हो कर पश्चिमी देशों का अनूसरण नहीं करना चाहते।

**4. राष्ट्रीय राज्य का परिचालन** – शिल्स के अनूसार राष्ट्र राज्य के मानको के अनुरूप ही रालनीतिक जीवन का संगठन एवं कार्य सम्पन्नता निर्धारित होता है। इस दृष्टिकोण को अस्वीकार करते हुए कहा कि राष्ट्र राज्य राजनीतिक विकास की पर्याप्त शर्त नहीं हो सकता।

**5. प्रशासकीय एवं कानूनी विकास** – मैक्स वेबर तथा पारकिंसन्स आदि के विकास के लिए सुदृढ़ नौकरशाही के होने को पाई राजनीतिक विकास का मानक नहीं मानता। पार्ठ ने तर्क दिया कि यदि प्रशासन को अधिक महत्व दिया गया तो उससे राजनीतिक व्यवस्था में असंतुलन पैदा हो जायगा।

**6. लोक सहभागिता** – पाई ने इस मान्यता का भी खण्डन किया कि जनता की राजनीतिक जागरूकता और मताधिकार के विस्तार से लोकतांत्रिक मूल्यों का सुदृढ़िकरण होता है। पाई ने कहा कि भ्रष्ट जनोत्तेजकों द्वारा जनता को गुमराह किया जाता है ऐसे में राजनीतिक विकास संभव नहीं है।

**7. लोकतांत्रिकता का विकास** – लॉ पैलोम्बारा ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि लोकतांत्रिक व्यवस्था का विकास ही राजनीतिक विकास है। पाई ने इसको अमान्य करते हुए कहा कि लोकतंत्र एवं राजनीतिक विकास को एक नहीं माना जा सकता क्यों कि मात्र लोकतंत्र होने से ही व्यवस्था की क्षमता में वृद्धि नहीं हो जाती।

**8. स्थायित्व एवं परिवर्तनशीलता** – रिग्स ने तर्क दिया कि आर्थिक सामाजिक प्रगति का कोइ भी रूप अनिश्चितता की स्थिति में नहीं हो सकता तथा व्यवस्थित एवं उददे्श्पूर्ण परिवर्तन में ही सामाजिक–आर्थिक विकास हो सकता है। इसकी आलोचना करते हुए पाई कहते हैं कि यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि कितनी व्यवस्था आवश्यक है और किस उददे्श्य के लिए परिवर्तन किया जा रहा है।

**9. गतिशीलता और शक्ति** – रालनीतिक व्यवस्थाओं का मूल्यांकन व्यवस्था में शक्ति के प्रयोग तथा मात्रा पर निर्भर करता है। परन्तु पाई का मत है कि यह व्याख्या लोकतांत्रिक व्यवस्था पर ही लागु हो सकता है दूसरी व्यवस्थाएं भी राजनीतिक रूप से विकसित हो सकती हैं। कई बार सत्ता के संचालन को सीमित कर दिया जाता है।

**10. सामाजिक परिवर्तन** – पाई मानता है कि सामाजिक विकास राजनीतिक विकास से जोड़ा जा सकता है परन्तु यह तत्व आधुनिकीकरण से संबद्ध है।

पाई के राजनीतिक विकास के लक्षण

इन मान्यताओं के खण्डन के पश्चात लुसियन पाई ने राजनीतिक विकास की तीन विशेषताएॅ बतलाई –

**1. समानता (Equality)** – उसकी मान्यता है कि राजनीतिक व्यवस्था में समानता स्थापित करने की प्रवृति होनी चाहिए। पाई ने समानता के तीन मापदण्डों निर्धरित किये – पहला, नागरिकों को सार्वजनिक एवं सामूहिक स्तर पर व्यवस्था में भाग लेने की समानता, दूसरा, कानूनों का सार्वभौमिक होना अर्थात् सभी के लिए समान कानून लागू करना तथा तीसरा, राज्य के विभिन्न पदों पर भर्ती में योग्यता तथा कार्य सम्पादन की क्षमता सभी के लिए समान हों।

**2. क्षमता (Capacity)** –पाई ने तीन प्रकार की क्षमताओं को स्पष्ट किया है जैसे राजनीतिक व्यवस्था की आवश्यक कार्यों के सम्पादन की क्षमता, व्यवस्था के विभिन्न राजनीतिक कार्यों की सुस्पष्टता की क्षमता तथा प्रशासन में विवेकपूर्ण एवं लौकिकीकरण की क्षमता

**3. विभिन्नीकरण (Differenciation)** – पाई ने तीन प्रकार के विभेदीकरण पर बल दिया – समाज तथा राज्य के विभिन्न अंगों, पदों एवं विभागों एवं उनके कार्यों का सुस्पष्ट होना, व्यवस्था के विभिन्न राजनीतिक कार्यों की सुस्पष्टता तथा विभिन्न अंगों की जटिल प्रक्रियाओं कर एकीकरण ताकि व्यवस्था में विघटन नहीं हो।

## राजनीतिक विकास के साधन

राजनीतिक विकास के विभिन्न साधन निम्न प्रकार से स्परूट किये गये हैंः–

1. राजनीतिक दल – दलों के माध्यम से राजनीतिक नेतृत्व का विकास होता है। ये लोकतांत्रिक व्यवस्था का प्राण होते हैं मतदान का विस्तार, लोकसहभागिता का विस्तार तथा समस्याओं की पहचान और उनके निवारण में कारगर होते हैं।

2. सेना – कई बार राजनीतिक दल समुचित नेतृत्व नहीं दे पाते। ऐसे में सेना देश को उथल पुथल की स्थिति से उबार लेती है और राजनीतिक विकास की प्रक्रिया प्रशस्त होती है क्यों कि सेना राजनीतिक तंत्र को कुशल बना देती है।

3. क्रान्तिकारी या चमत्कारी नेतृत्व – संकट की स्थिति से उबरने मे क्रान्तिकारी एवं चमत्कारी नेतृत्व मार्ग प्रशस्त करता है। उनके विशिष्ट गुणों के कारण दृढ़ कदम एवं स्थायी नीतियों से का प्रतिपादन होता है जो समस्याओं का निराकरण कर देते है। ये अपने विशिष्ट गुणों के कारण राष्ट्रीय एकता को बनाये रखने में सक्षम होते हैं।

4. आधुनिक नौकरशाही – समुचित नीतियों के निर्धारण, उनको लागु करने तथा शासन को स्थिरता प्रदान करने में आधुनिक एवं योग्य नौकारशाही परम्परागत समाज को आधुनिक बनाने में सहायक होती है।

5.राष्ट्रीयता की भावना –राष्ट्रीयता की भावना व्यक्ति में व्यक्तिगत स्वार्थ के स्थान पर राष्ट्रीय हित को प्राथमिकता देने लगती है जिससे राष्ट्र विकास के पथ पर अग्रसर हो जाता है।

6. राजनीतिक सहभागिता – नागरिकों के बीच समानता, समस्याओं के निवारण की क्षमता तथा कार्यों के विभाजन में लाक राजनीतिक सहभागिता अत्यंत सहायक होती है। जितने ज्यादा लोग राजनीतिक सहभागिता निभायेंगे उतना ही अधिक राष्ट्र का राजनीतिक विकास होता है।

लोगों के बीच अशिक्षा, आर्थिक पिछड़ापन, साम्प्रदयिक एवं सामाजिक विद्वेष, राजनीतिक दलों में सिद्धान्तों एवं नीतियों का लोप होना, आदर्श एवं समर्पित नेतृत्व का अभाव तथा धर्मनिरपेक्षता या लौकिकीरण का अभाव आदि कुछ ऐसे तत्व हैं जो राजनीतिक विकास में बाधक होते हैं।

## वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. राजनतिक विकास को परम्परागत प्रतिमानों को नये मांगों के अनुकूल बनाने की बात किसने कहीं

अ. मैकेन्जी ब. आमण्ड एवं पॉवेल स. लुसियन पाई द. कॉटस्की

2. लुसियन पाई ने राजनीतिक विकास के कितने मान्यताओं का खण्डन किया

अ. 3 ब. 5 स. 7 दा 10

3. निम्नलिखित में कौन लुसियन पाई द्वारा प्रतिपादित राजनीतिक विकास का लक्षण नहीं है?

अ. समानता ब. क्षमता स. विभेदीकरण द. युक्तिसंगत प्रशासन

4. न्यू आस्पेक्ट्स ऑफ पॉलिटिकल डेवलपमेंट शीर्षक पुस्तक का लेखक कौन है?

अ. आमण्ड एवं पॉवेल ब. डेविड एप्टर स. मैकेन्जी द. लुसियन पाई

5. निम्नलिखित में से कौन राजनीतिक विकास का साधन नहीं है?

अ. राजनीतिक दल ब. सुदृढ़ नौकरशाही स. राष्ट्रीयता की भावना द. इनमें से कोई नहीं